वराह, गरुड एवं विष्णु पुराणों में शिवतत्त्व

वराह, गरुड एवं विष्णु – ये तीनों वैष्णव महापुराणों के अन्तर्गत आते हैं। वराह पुराण में मानव कल्प की, गरुड पुराण में तार्क्ष्य कल्प की तथा विष्णु पुराण में वराह कल्प[1] की कथाओं एवं प्रसंगों की चर्चा की गयी है। वराह पुराण एवं विष्णु पुराण दोनों के अधिकांश अंश आजकल प्राप्य नहीं हैं। वराह पुराण में (नारदीय पु. पू. ख. 103/2 एवं मत्स्य पुराण के अनुसार) 24000 श्लोक होने चाहिये, परन्तु वर्तमान में हमें मात्र 10700 श्लोक ही मिलते हैं। इसी प्रकार विष्णु पुराण में श्लोकों की संख्या 23000 मानी गयी है जबकि वर्तमान में प्राप्य विष्णु पुराण में मात्र 7000 श्लोक हैं। अगर हम विष्णुधर्मोत्तर पुराण को भी विष्णु पुराण का अंश मान लें (जैसा नारद महापुराण पूर्वभाग अध्याय 94 में कहा गया है) तो कुल श्लोक संख्या 16000 ही होती है। अर्थात् दोनों पुराणों को एक ही पुराण के उत्तर एवं पूर्व भाग मान लें तो भी 7000 श्लोकों की कमी है। यहाँपर केवल 7000 श्लोकवाले विष्णु पुराण के आधार पर ही शिवतत्त्व पर विचार किया जायगा क्योंकि बहुत से विद्वान् विष्णुधर्मोत्तर पुराण[2] को विष्णु पुराण का अंश नहीं मानते। नारद एवं मत्स्य पुराण के अनुसार गरुड पुराण में क्रमशः 19000 तथा 1800 श्लोक हैं। परन्तु वर्तमान में (लगभग) 8000 श्लोक ही प्राप्य हैं।

भगवान् शिव ब्रह्म के रूप में

वराह पुराण में दक्षयज्ञ – विध्वंस के पश्चात् देवगणों ने भगवान् शिव की स्तुति करते हुए उन्हें आर्तजनों का दुःख दूर करनेवाले, समस्त देवों के ईश्वर, शुद्धस्वरूप, सबके स्रष्टा (सर्व), देवताओं पर अनुग्रह करने हेतु कालकूट का पान करनेवाले, विश्वेश्वर, विश्वमूर्ति, सभी गुणों से सम्पन्न, अपने श्रीविग्रह में सर्ग एवं अंगों सहित संपूर्ण वेद तथा विद्यायें आदि को धारण करनेवाले, देवदेव, महादेव, विश्वेश्वर तथा परमेश्वर आदि कहा है। (वरा. पु. 21/72 – 77)

तारकासुर पर विजय प्राप्त करने के लिये देवगण शिव – पुत्र कार्तिकेय को सेनापति बनाने की इच्छा से शिव के पास जाकर उन्हें प्रसन्न करने हेतु स्तुति करते हैं। अपनी स्तुति में वे शिव को विश्वपति, जगत्पति, अच्युत, पुरुषोत्तम, श्रेष्ठ देवताओं में भी परम श्रेष्ठ, प्रभु, आदिदेव, विभु, अनन्त नामवाले, अक्षय, पृथ्वी आदि पंच तत्त्वों के रूप में प्रतिष्ठित, अग्निस्वरूप, शेषनाग का यज्ञोपवीत पहननेवाले, देवेश्वर, मृत्युञ्जय, पुरुष, शक्ति गिरिजा को अर्द्धांग में धारण करनेवाले, जगदाधार,

1. विष्णु पुराण में भगवान् शिव संबंधी बहुत ही कम सन्दर्भ प्राप्त होते हैं, और जो मिलते भी हैं वे अत्यन्त संक्षिप्त हैं। इसका प्रथम कारण यह हो सकता है कि इस पुराण के अधिकांश (लगभग 70%) भाग अप्राप्य हैं तथा दूसरा कारण यह हो सकता है कि भगवान् शिव के आदेश या वरदान के प्रभाव के कारण वराह कल्प में भगवान् विष्णु ही सभी लोकों को प्रकाशित करते हैं, अर्थात् उस कल्प के प्रमुख देव भगवान् विष्णु हैं। इस तथ्य को लिंग पुराण (पूर्वभाग/अध्याय 24/श्लोक 8 – 9) में व्यक्त किया गया है।

2. इस पुस्तक में विष्णुधर्मोत्तर पुराण पर अलग से एक अध्याय लिखा गया है।

विशुद्ध ज्ञानघन, नारायण तथा ब्रह्मा जिसके रूप हैं, प्रधान देवता, विश्वम्भर आदि बतलाते हैं।(वरा. पु. अध्याय 25/17-28)

भगवान् रुद्र सम्पूर्ण ज्ञान के निधान हैं। समस्त देवता उनके अंगभूत हैं तथा वे विशुद्ध हैं। भगवान् शिव देवताओं से कहते हैं कि मैं आदि सनातन काल से सम्पूर्ण विद्याओं का अधीश्वर हूँ। (वरा. पु. 21/22, 81)

सर्वज्ञानमयो देवः सर्वदेवमयोऽमलः।।
अहं च सर्वविद्यानां पतिराद्यः सनातनः।।

एक अन्य स्थल पर भी देवगणों ने उन्हें देवताओं का अधिष्ठाता, वेदान्त द्वारा ज्ञेय, यज्ञमूर्ति सर्वसमर्थ प्रभु, विश्व के शासक तथा उत्पादक आदि कहा है(व. पु. अध्याय 33/16-25)। अन्यत्र भगवान् वराह रुद्रदेव को सर्वज्ञानी, सबकी सृष्टि के प्रवर्तक, परम प्रभु एवं सनातन पुरुष कहते हैं(वरा. पु. अध्याय 72/1)। भगवान् विष्णु ने किसी प्रसंग में रुद्रदेव को सनातन, सर्वज्ञ एवं देवों द्वारा पूज्य कहा है(वरा. पु. अध्याय 73/42)। भगवान् वराह एक अन्य स्थल पर शिव को पुराणपुरुष, शाश्वत देवता, यज्ञस्वरूप, अविनाशी, विश्वमय, अज एवं सनातन(वरा. पु. अ. 74/1-2) तथा अन्यत्र सबका मूल कारण, परम आश्रय, देवताओं के भी देवता, साम एवं ऋक्स्वरूप, बनाने, बिगाड़ने तथा बिगड़े हुए को पुनः बनानेवाले तथा मृत्यु के स्वामी आदि कहा है(वरा. पु. अ. 136/24-25)।

सर्वज्ञं सर्वकर्तारं भवं रुद्रं पुरातनम्।
..... परमेश्वरम्।। (वरा. पु. 72/1)
सर्वज्ञस्त्वन्न सन्देहो ज्ञानराशिः सनातनः।
देवानाञ्च परं पूज्यः .....।। (वरा. पु. 73/42)
रुद्रं पुराणपुरुषं शाश्वतं क्रतुमव्ययम्।।
विश्वरूपमजं शम्भुं त्रिणेत्रं शूलपाणिनम्। (वरा. पु. 74/1-2)
त्वं कर्त्ता च विकर्त्ता च विकाराकार एव च।।
त्वं वैशाख्यं वियोगं च त्वं योनिस्त्वं परायणम्।
त्वमुग्रदेवदेवादिस्त्वं साम त्वं तथा दिशः।। (वरा. पु. 136/24-25)

चन्द्रमा भगवान् शिव की स्तुति में उन्हें सौम्यस्वरूप, उमापति, भक्तों पर कृपा करने के लिये सदैव आतुर रहनेवाले, पंचमुख, त्रिलोचन, नीलकण्ठ, चन्द्रमा को ललाटपर धारण करनेवाले, पिनाकधारी, स्वाभाविकरूप से भक्तों को अभय प्रदान करनेवाले, दिव्यरूपधारी, देवेश्वर, त्रिशूल एवं डमरूधारी, गजचर्मधारी, प्रलय में भी अचल रहनेवाले, सर्प का यज्ञोपवीत तथा रुद्राक्षमाला धारण करनेवाले, स्वाभाविक रूप से भक्तों की इच्छा पूर्ण करनेवाले, सबके शासक, अद्भुतरूपधारी, सूर्य, चन्द्र एवं अग्नि को नेत्ररूप में धारण करनेवाले, जटा से गंगा को प्रकट करनेवाले तथा मन एवं वाणी

से परे कहा है(वरा. पु. अ. 144/20-25)। स्तुति के कुछ अंश देखें-

अरूपमपि सर्वेशं भक्तेच्छोपात्तविग्रहम्।।

वह्निसोमार्कनयनं मनोवाचामगोचरम्। (वरा. पु. 144/24-25)

अर्थात्-जो रूपरहित तथा सबके शासक हैं तथा भक्तों की इच्छा पूर्ण करना जिनका स्वाभाविक गुण है; सूर्य, चन्द्रमा और अग्नि जिनके नेत्र हैं, मन एवं वाणी की जिनके पास पहुँच नहीं है (उन भगवान् शंकर को प्रणाम करता हूँ)।

नन्दी भगवान् शिव की स्तुति में उन्हें प्रकट होकर जगत् का धारण-पोषण करनेवाले, स्वाभाविक रूप से वर देनेवाले, प्रभु, संसार का संहार एवं पालन करनेवाले, भूत एवं भव्य, विभु, पशुपति, संसार के स्रष्टा, भक्तों के प्रिय तथा परमात्मा आदि कहा है(वरा. पु. अ. 213/43-49)। भगवान् शिव समस्त संसार के शासक हैं। देवता और दानव सभी उन्हें अपना गुरु मानते हैं।(वरा. पु. अ. 216/10)

वराह पुराण के एक स्थल पर बताया गया है कि शिव, शंकर, नारायण, विष्णु आदि नाम परब्रह्म के ही हैं(व. पु. 72/12-13)। अन्यत्र कहा गया है कि परम पुरुष को शिव भी कहा जाता है एवं विष्णु भी(व. पु. 25/4)।

नारायणः शिवो विष्णुः शङ्करः पुरुषोत्तमः।।

एतेषु नामभिर्ब्रह्म परं प्रोक्तं सनातनम्। (व. पु. 72/12-13)

पुरुषो विष्णुरित्युक्तः शिवो वा नामतः स्मृतः। (वराह पु. 25/4)

पुनः शिव को परम पुरुष माना गया है तथा उनका विष्णु से तादात्म्य किया गया है।

त्रिशूलपाणे पुरुषोत्तमाच्युत .....।।

त्वमादिदेवः पुरुषोत्तमो हरिर्भवो महेशस्त्रिपुरान्तको विभुः। (व. पु. 25/18-19)

भावार्थ यह है कि सर्वव्यापी भव, महेश एवं त्रिपुरारि-आप आदिदेव एवं पुरुषोत्तम हरि हैं।

गरुड पुराण में शिवरात्रि व्रत की समाप्ति पर की जानेवाली स्तुति में भगवान् शिव को जगत्पति एवं त्रैलोक्याधिपति विशेषण दिया गया है।

अविघ्नेन व्रतं.....।

क्षमस्व जगतां नाथ त्रैलोक्याधिपते हर।। (गरुड पु. पू. ख. 124/17)

शिवार्चनोपरान्त की जानेवाली स्तुति में भगवान् शिव को जगत्-स्वरूप, दाता एवं(जीवरूप में) भोक्ता स्वीकार किया गया है।

शिवो दाता शिवो भोक्ता शिवः सर्वमिदं जगत्। (ग. पु. पू. ख./23/25)

आगे उन्हें माया, शुद्ध विद्या एवं ईश्वर कहा गया है-

माया च शुद्धविद्या च ईश्वरश्च सदाशिवः। (ग. पु. पू. ख. 23/31)

एक अन्य प्रसंग में भगवान् शिव को स्पष्टरूप से परब्रह्म स्वीकार किया गया है।

अस्ति देवः परब्रह्मस्वरूपी निष्कलः शिवः।
सर्वज्ञः सर्वकर्त्ता च सर्वेशो निर्मलोद्वयः।।
स्वयं ज्योतिरनाद्यन्तो निर्विकारः परात्परः।
निर्गुणः सच्चिदानन्दः तदंशाज्जीवसंज्ञकः।।[1] (ग. पु. 16/6-7)

भावार्थ है- भगवान् शिव परब्रह्मस्वरूप, निष्कल, सर्वज्ञ, सर्वकर्त्ता, सर्वेश, निर्मल या शुद्ध, अद्वय(अर्थात् एक), स्वयंप्रकाश, अनादि-अनन्त, निर्विकार, परात्पर(विश्व से परे), निर्गुण एवं सच्चिदानन्द हैं। उनका अंश ही जीव कहलाता है।

उपरोक्त उद्धरणों में भगवान् शिव को ब्रह्म की सभी विशेषताओं से युक्त माना गया है। अर्थात् भगवान् शिव ही परब्रह्म हैं। जिन पुराणों की यहाँ चर्चा की जा रही है उनमें भगवान् शिव के निर्गुण एवं सगुण दोनों रूपों की स्पष्ट रूपरेखा मिलती है।

वराह पुराण के 21वें तथा 213वें अध्याय में भगवान् शिव के सगुण साकाररूप की झलक मिलती है। 21वें अध्याय में दक्षयज्ञ के विध्वंस के उपरान्त भगवान् शिव के सगुण-साकाररूप की स्तुति देवताओं ने की थी। इसी प्रकार 213वें अध्याय में नन्दी को भगवान् शिव के साकार विग्रह के दर्शन हुए थे। इन दोनों प्रसंगो में भगवान् शिव त्रिनेत्रधारी, सर्पोंके आभूषण से युक्त, हाथ में त्रिशूल आदि तथा माथे पर अर्धचन्द्र को धारण किये हुए, बाघाम्बर अथवा गजचर्म धारण किये हुए नन्दीश्वर आदि गणों से घिरे हुए प्रकट हुए थे। निर्गुण-निराकार शिव ही सृष्टि के संचालन हेतु सगुण-साकार विग्रह धारण करते हैं। विष्णु पुराण(1/7/13) में भगवान् शिव के अर्धनारीश्वर रूप का जिक्र है। इसी प्रकार शिरपर गंगा को धारण करने का भी उल्लेख विष्णु पुराण में मिलता है।

शिवोपासना

भगवान् शिव को समस्त विपत्तियों को दूर करनेवाला(वरा. पु. 21/72), भोग एवं मोक्ष प्रदान करनेवाला कहा गया है। वराह पुराण में भगवान् शिव को सबके द्वारा पूज्य कहा गया है(21/85)। भगवान् शिव को पशुपति तथा जीवों को पशु कहा गया है। पशुपति ही जीवों को मुक्त करनेवाले हैं(वरा. पु. 33/27-28 तथा 213/46)। एक स्थल पर कहा गया है कि कलियुग में वेदान्ती लोग रुद्र की शरण लेते हैं(वरा. पु. 71/58)।[2] उन्हें आवागमन से मुक्त करनेवाला(वरा. पु. 213/44), वरदाता तथा भक्तवत्सल(वरा. पु. 213/43, 48-49, 216/15 आदि) कहा गया है। रावण ने शिवभक्ति द्वारा ही तीनों लोकों के विजय का वरदान पाया था। (वरा. पु. 216/16)

1. 'शैवमत' (लेखक डॉ. यदुवंशी, बिहार राष्ट्रभाषा-परिषद्, पटना, 1955) के पृ. 255 से उद्धृत। ये श्लोक लेखक को उपलब्ध 'गरुड पुराण' की प्रति में नहीं मिलते।
2. **'ये रुद्रमुपजीवन्ति कलौ वेदान्तिका नराः।'** (वरा. पु. 71/58)

नन्दी की तपस्या से प्रसन्न हो भगवान् शिव उनसे पूछते हैं कि तुम क्या चाहते हो? – ईशत्व, अमरत्व, इन्द्र अथवा ब्रह्मादि का पद, अष्टसिद्धि, मुक्ति या कुछ और (वरा. पु. 213/52 – 53)। इस प्रसंग से स्पष्ट है कि भगवान् शिव समस्त ऐश्वर्य एवं मुक्ति आदि सबकुछ दे सकते हैं।

एक प्रसंग में भगवान् शिव देवताओं से कहते हैं कि वाग्मती और मणिवती के संगमपर अगर कोई शुद्ध ब्राह्मण एक दिन रुद्राध्याय का पाठ करता है तो वह वेदों का ज्ञाता हो जाता है तथा उसके परिवार के सभी लोग मुक्त हो जाते हैं (वरा. पु. 215/109 – 111)। पुनः भगवान् शिव अगस्त्य आदि ऋषियों को कह रहे हैं कि "ब्रह्मा सहित सभी देवता और दानव सदा सत्ययुग में मेरे स्तवन के लिये प्रयत्नशील रहते हैं। भोग की इच्छा करनेवाला देवसमुदाय मेरी लिंगमूर्ति का यजन करता है" (वरा. पु. 72/9 – 10)

ब्रह्मा देवासुराः स्तौति मां सदा तु कृत युगे।।
लिङ्गमूर्त्तिञ्च मां देवा यजन्ते भोगकाङ्क्षिणः। (व. पु. 72/9 – 10)

गरुड पुराण में सूतजी ऋषियों से कहते हैं कि भगवान् शिव की अर्चना से भोग एवं मोक्ष दोनों प्राप्त होते हैं।

शिवार्चनं प्रवक्ष्यामि भुक्तिमुक्तिकरं परम्। (ग. पु. पू. ख. 22/1)

एक अन्य स्थल पर कहा गया है कि शिव की उपासना से धर्म, अर्थ काम एवं मोक्ष सभीकुछ प्राप्त होता है।

शिवार्चनं प्रवक्ष्यामि धर्मकामादिसाधनम्। (ग. पु. पू. ख. 23/1)

आगे कहा गया है कि शिवपूजक काल द्वारा शासित नहीं होता।

एवं शिवार्च्चकोध्यानी सर्वदा कालवर्जितः।। (ग. पु. पू. ख. 23/52)

गरुड पुराण में बड़े विस्तार के साथ शिवार्चन एवं शिवरात्रिव्रत की विधि का वर्णन किया गया है। शिवार्चन एवं शिवरात्रिव्रत के प्रभाव से व्यक्ति सभी प्रकार के लौकिक एवं पारलौकिक भोगों को प्राप्त कर सकता है, तथा अन्त में शिवसायुज्य अर्थात् चरम मुक्ति को भी प्राप्त कर सकता है।

वराह पुराण में शिव के कुछ व्रतों तथा तीर्थों जैसे वाराणसी आदि का वर्णन है। ऊपर हमने गोकर्ण (वाग्मती एवं मणिवती के संगम) की महिमा को बताया था। गरुड पुराण में काशी की महिमा का वर्णन है। काशीतीर्थ में मरनेवाले को मुक्ति प्राप्त होती है परन्तु जो लोग काशी में पाप करते हैं उनकी आलोचना की गयी है तथा कहा गया है कि अपने पापों का प्रायश्चित्त न करनेवाले पापियों की काशीक्षेत्र में कहीं भी, जिस किसी तरह, मृत्यु हो जानेपर उन्हें पाप के अनुसार यम – यातना, अर्थात् तीस हजार सालतक रुद्रपिशाचता, प्राप्त होती है, तत्पश्चात् शीघ्र अथवा देरी से उनकी मुक्ति होती है।

वाराणस्यां स्थितो यो वै पातकेषु रतः सदा।

योनिं प्रविश्य पैशाचीं वर्षाणामयुतत्रयम्।।
पुनरेव च तत्रैव ज्ञानमुत्पद्यते ततः।
मोक्षं गमिष्यते सोऽपि गुह्यमेतत् खगाधिप।

(गरुड पुराण, कल्याण के शिवांक पृ. 414 से उद्धृत)

ब्रह्माजी भगवान् शिव के चतुर्दशी व्रत की महिमा बताते हुए कहते हैं कि इस दिन जो उपवास(व्रत) रखकर भगवान् शिव की पूजा करता है तथा केवल गेहूँ से निर्मित भोज्यपदार्थ ग्रहण करता है उसपर भगवान् शिव प्रसन्न होते हैं तथा वह मोक्ष को प्राप्त होता है।(वराह पु. 33/29-31)

गरुड पुराण में एक स्थल पर कहा गया है कि शिव एवं शक्ति के ज्ञान से ज्ञानी मुक्त होकर शिवस्वरूप को प्राप्त कर लेता है।

शक्तिः शिवश्च तान् ज्ञात्वा मुक्तो ज्ञानी शिवो भवेत्। (ग. पु. पू. ख. 23/31)

वराह पुराण में बताया गया है कि 108 दानों की जपमाला उत्तम होती है। इसी प्रकार रुद्राक्ष की माला को सर्वोत्तम कहा गया है(वरा. पु. 128/80-81)। आगे बताया गया है कि गृहस्थ के घर में दो शिवलिंग, तीन शालग्राम की मूर्तियाँ, दो गोमतीचक्र, दो सूर्य की प्रतिमाएँ, तीन गणेश तथा तीन दुर्गा की प्रतिमाओं का पूजन करना निषिद्ध है।

गृहे लिङ्गद्वयं नार्च्यं शालग्रामत्रयं तथा।।
द्वे चक्रे द्वारकायास्तु नार्च्यं सूर्यद्वयं तथा।
गणेशत्रितयं नार्च्यं शक्तित्रितयमेव च।। (वरा. पु. 186/40-41)

इसी प्रकार अग्नि से जली हुई तथा टूटी-फूटी प्रतिमा की पूजा नहीं करनी चाहिये।

गृहेऽग्निदग्धा भग्ना वा नैव पूज्या वसुन्धरे। (वरा. पु. 186/43)

त्रिदेवों की एकता

विवेच्य तीनों ही पुराणों में भगवान् शिव एवं विष्णु की तात्त्विक एकता का वर्णन अनेक स्थलों पर हुआ है। कुछ जगहों पर ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव तीनों देवों की एकता का भी वर्णन है। विष्णु पुराण(1/2/2; 1/8/23; 1/9/56, 69; 1/22/28-29, 33; 2/4/56 तथा 5/33/47-49) में भगवान् शिव एवं विष्णु के तादात्म्य संबंध (या तात्त्विक एकता) का वर्णन किया गया है।

शिवजी अपने भक्त बाणासुर को अभय का वरदान देने के कारण कृष्ण से कहते हैं कि आप मेरे वरदान को मिथ्या न करें(अर्थात् युद्ध में उसे न मारें)। इसी प्रसंग में भगवान् श्रीकृष्ण शिवजी से कह रहे हैं कि आपने जो अभय दिया है वह सब मैंने भी दे दिया। "आप अपने को मुझसे सर्वथा अभिन्न देखें। जो मैं हूँ सो आप हैं.....। हे हर! जिन लोगों का चित्त अविद्या से मोहित है वे भिन्नदर्शी पुरुष ही हम दोनों में भेद देखते और बतलाते हैं .....।"

मत्तोऽविभिन्नमात्मानं द्रष्टुमर्हसि शङ्कर।
योऽहं स त्वं .....।।
अविद्यामोहितात्मानः पुरुषा भिन्नदर्शिनः।
वदन्ति भेदं पश्यन्ति चावयोरन्तरं हर।। (वि. पु. 5/33/47-49)

पराशरजी मैत्रेयजी को कह रहे हैं कि "हे द्विजोत्तम! भगवान् विष्णु शंकर हैं और श्री लक्ष्मीजी गौरी हैं।"

शङ्करो भगवाञ्छौरिर्गौरी लक्ष्मीर्द्विजोत्तम। (वि. पु. 1/8/23)

आगे उल्लेख है कि "जिस अभूतपूर्व देव की ब्रह्मा, विष्णु और शिवरूप शक्तियाँ हैं वही भगवान् विष्णु का पद है।" वास्तव में वह केवल भगवान् विष्णु का ही नहीं अपितु शिवजी एवं ब्रह्माजी का भी परमपद है। वह पद ही निर्गुण एवं परात्पर पद है। अतः तात्त्विक रूप में तीनों देव एक ही हैं।

शक्तयो यस्य देवस्य ब्रह्मविष्णुशिवात्मिकाः।
भवन्त्यभूतपूर्वस्य तद्विष्णोः परमं पदम्।। (विष्णु पु. 1/9/56)

इसी अध्याय में आगे कहा गया है कि- "आप निर्विशेष हैं तथापि आप ही ब्रह्मा हैं, आप ही शंकर हैं तथा आप ही इन्द्र, अग्नि .....हैं।"

नमो नमोऽविशेषस्त्वं त्वं ब्रह्मा त्वं पिनाकधृक्। (वि. पु. 1/9/69)

गरुड पुराण(पू. ख. 4/11, तथा पू. ख. 23/32 आदि) में भी तीनों देवों की एकता का प्रतिपादन किया गया है। एक स्थल पर कहा गया है कि वही शिव हैं, वही विष्णु और ब्रह्मा हैं और मुक्ति प्राप्त कर लेने पर जीव भी ब्रह्म भाव को प्राप्त कर लेता है।

यः शिवः स हरिर्ब्रह्मा सोऽहं ब्रह्मास्मि मुक्तितः। (ग. पु. पू. ख. 23/32)

पुनः कहा गया है कि जगत्पति विष्णु स्वयं ब्रह्मा होकर जगत् की रचना करते हैं, निजस्वरूप से पालन तथा रुद्ररूप से संहार करते हैं।

ब्रह्मा भूत्वासृजद्विष्णुर्जगत्पाति हरिः स्वयम्।
रुद्र रूपो च कल्पांते जगत् संहरते प्रभुः।। (ग. पु. पू. ख. 4/11)

वराह पुराण में भी अनेक स्थलों(यथा 9/7; 10/13-16; 25/18-19; 58/3-6; 70/26-28, 40-41, 47; 71/5-7; 72/2, 12-16) पर भगवान् शिव का अन्य दो देवताओं विष्णु एवं ब्रह्मा से तादात्म्य बतलाया गया है।

भगवान् शिव एवं विष्णु का एक-सा रूप है(**येयं मूर्तिर्भगवतः शंङ्करः स स्वयं हरिः,** व. पु. 9/7)। त्रेतायुग में विष्णु ने शिव का रूप धारण किया था(**त्रेतायां रुद्ररूपस्तु द्वापरे यज्ञ-मूर्त्तिमान्,** व. पु. 10/16)। शिव को परम पुरुष माना गया है और विष्णु से उनका तादात्म्य स्थापित

किया गया है।

त्रिशूलपाणे पुरुषोत्तमाच्युत .....।।

त्वमादिदेवः पुरुषोत्तमो हरिर्भवो महेशस्त्रिपुरान्तको विभुः। (वरा. पु. 25/18-19)

वराह पुराण में सौभाग्यव्रत के प्रसंग में श्रीशिव और श्रीविष्णु में भेद-बुद्धि रखना महान् दोष बतलाते हुए कहा गया है कि जो लक्ष्मी हैं, वह पार्वती ही हैं और जो श्रीहरि हैं, वे साक्षात् त्रिलोचन ही हैं, सब शास्त्रों एवं पुराणों में ऐसा प्रतिपादित है। इसके विपरीत जो कहता है, वह शास्त्र के विरुद्ध कहता है। ऐसी बात कहनेवाला मनुष्य रुद्र अर्थात् दुःख देनेवाला है और ऐसा शास्त्र शास्त्र नहीं, काव्य है-अनादरणीय है। भगवान् विष्णु, श्रीशिव और लक्ष्मी, गौरी कही जाती हैं। इनमें परस्पर भेद को समझनेवाला सज्जनों की दृष्टि में अधम कहा गया है। उसे नास्तिक समझो, वह सब धर्मों से बहिष्कृत है।

या श्रीः सा गिरिजा प्रोक्ता यो हरिः स त्रिलोचनः।।
एवं सर्वेषु शास्त्रेषु पुराणेषु च गद्यते।
एतस्मादन्यथा यस्तु ब्रूते शास्त्रं पृथक्तया।।
रुद्रो जनानां मर्त्यानां काव्यं शास्त्रं न तद्भवेत्।
विष्णुं रुद्रकृतं ब्रूयाच्छ्रीर्गौरीति निगद्यते।।
एतयोरन्तरं यच्च सोऽधमेत्युच्यते जनैः।
तं नास्तिकं विजानीयात्सर्वधर्मबहिष्कृतम्।। (व. पु. 58/3-6)

रुद्रगीता[1] में भगवान् शिव कहते हैं कि "जो लोग मुझे विष्णु एवं ब्रह्मा से भिन्न समझकर मेरा भजन करते हैं वे पापकर्मी हैं और वे नरकगामी हैं" (वरा. पु. 70/40-41)।

मां विष्णोर्व्यतिरिक्तं ये ब्रह्मणश्च द्विजोत्तम।।
भजन्ते पापकर्माणस्ते यान्ति नरकं नराः। (वरा. पु. 70/40-41)

वे पुनः ऋषियों से कहते हैं कि "जो लोग मुझे दूसरा नारायण या दूसरा ब्रह्मा समझते हैं, और जो ब्रह्मा को अपर रुद्र मानते हैं, वे यथार्थ को जाननेवाले हैं। क्योंकि गुण एवं बल से हम तीनों एक हैं। हममें भेद बुद्धि ही मोह है" (वरा. पु. 70/47)। रुद्रगीता के दूसरे अध्याय में पुनः भगवान् शिव ऋषियों से कह रहे हैं कि "हम तीनों में कोई भेद नहीं है तथा ज्ञानी पुरुष कोई भेद देखता भी नहीं है" (वरा. पु. 71/7)। वे कहते हैं कि "जो कुछ भी मुझे अर्पित किया जाता है वह तीनों देवों द्वारा ग्रहण किया जाता है" (वरा. पु. 71/6)। क्योंकि भगवान् शिव सर्वदेवमय हैं। रुद्रगीता में आगे कहा गया है कि "वह जो विष्णु है वही ब्रह्मा है और जो ब्रह्मा है वही महेश्वर है" (वरा. पु. 70/26)। जो व्यक्ति तीनों वेदों के ज्ञाता हैं उन्होंने कहा है कि रुद्र, विष्णु एवं ब्रह्मा में जो अन्तर करता है वह

1. वराह पुराण के 70 एवं 71 वें अध्याय को रुद्रगीता भी कहा जाता है।

पापी है, दुष्ट है और वह अधोगति को प्राप्त होता है(वरा. पु. 70/27-28)।

यो विष्णुः स स्वयं ब्रह्मा यो ब्रह्मासौ महेश्वराः।।
वेदत्रये च यज्ञेऽस्मिन्पण्डितेप्येष निश्चयः।
यो भेदं कुरुतेऽस्माकं त्रयाणां द्विजसत्तम।।
स पापकारी दुष्टात्मा दुर्गतिं समवाप्नुयात्। (व. पु. 70/26-28)

एक स्थल पर कहा गया है कि नारायण, शिव, विष्णु, शंकर और पुरुषोत्तम-इनमें केवल नामों का ही भेद है। वस्तुतः इन सबको सनातन परब्रह्म परमात्मा कहते हैं। वैदिक कर्म से संबंध रखनेवाले पुरुषों के द्वारा ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश्वर-इन नामों का पृथक्-पृथक् उच्चारण होता है। वैदिक कर्म के अवसर पर ही शिव, विष्णु तथा वेदों का पार्थक्य है। वस्तुतः तीनों एक ही हैं। विद्वान् पुरुष को चाहिये कि इनमें भेद-भाव की कल्पना न करे। जो पक्षपात के कारण इसके विपरीत कल्पना करता है, वह पापी नरक में जाता है। (वरा. पु. 72/12-16)

उपसंहार

इस अध्याय में विवेचित सभी पुराण भगवान् शिव को परब्रह्म के रूप में स्वीकार करते हैं। भगवान् शिव सगुणरूप में त्रिनेत्रधारी, व्यालधारी, शशिशेखर, त्रिशूलधारी आदि अनेक विशेषताओं से युक्त हैं। उन्हें निष्कल, सर्वज्ञ, सर्वकर्त्ता, शुद्ध, अद्वय, स्वप्रकाश, अनादि-अनन्त, निर्विकार, परात्पर, निर्गुण एवं सच्चिदानन्द कहा गया है। भगवान् शिव दयालु हैं, उनकी उपासना सरल है क्योंकि वे शीघ्र प्रसन्न हो जानेवाले हैं। उनके अनेक व्रतों एवं तीर्थों का भी उल्लेख इन पुराणों में मिलता है जिनमें से शिवरात्रिव्रत तथा काशीतीर्थ महत्त्वपूर्ण हैं। शिवोपासना में शतरुद्रिय के जप का भी महत्त्व बताया गया है। लिंगोपासना की भी चर्चा पायी जाती है। भगवान् शिव की पूजा से व्यक्ति को सभी प्रकार के लौकिक एवं परलौकिक भोग एवं ऐश्वर्य तथा मोक्ष(या शिवसायुज्य) प्राप्त हो सकता है। लिंगपूजन से भी भोग एवं मोक्ष प्राप्त होता है।

इन पुराणों में भगवान् शिव को तात्त्विक रूप से ब्रह्मा तथा विष्णु से अभिन्न माना जाता है। तीनों देवों में भेद केवल सृष्टि के सन्दर्भ में गुणों को लेकर है न कि तत्त्व को लेकर। माया ही एक(परम) तत्त्व में भेद डालकर अज्ञानियों को तीन रूपों में समझने के लिये बाध्य करती है। परन्तु ज्ञानियों को इन तीनों में कोई भेद प्रतीत नहीं होता। जो इन तीनों देवों में मोह के कारण भेद देखते हैं उनकी दुर्गति होती है तथा जो तीनों में अभेद का दर्शनकर वैदिक रीति से(इन तीनों में से) किसी की भी उपासना करता है वह मोक्ष को प्राप्त कर सकता है।

(यह लेख पुराणों के निम्नलिखित पाठों पर आधारित है-'संक्षिप्त श्रीवराहपुराण' जो गीताप्रेस गोरखपुर द्वारा प्रकाशित है; 'वराहपुराणम्' जो मेहरचन्द लक्षमणदास, नई दिल्ली द्वारा 1984 में प्रकाशित है, 'गरुडपुराणम्' जो डॉ. रामशंकर भट्टाचार्य द्वारा संपादित तथा चौखम्बा संस्कृत सीरीज ऑफिस, वाराणसी द्वारा प्रकाशित है तथा 'श्रीश्रीविष्णुपुराण'(मूल श्लोक तथा हिन्दी अनुवाद सहित) जो गीताप्रेस, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित है।)